अमरकंटक की मिट्टी रंगों की अंतर्राष्ट्रीय उड़ान

जनगण सिंह श्याम पहले दूरदर्शी भारतीय जनजातीय कलाकारों में से एक थे, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उनकी कलात्मक शैली प्रधान गोंड संस्कृति में गहराई से जड़ें जमाए हुए थी। स्वयं शिक्षित न होने के बावजूद उनकी कला के प्रति रुचि ने उन्हें बचपन में ही रचनात्मकता की ओर प्रेरित किया। वे बालू में टहनियों से चित्र बनाते और चरने वाली भैंसों की पीठ पर चित्रांकन करते थे। उन्हीं के सुपुत्र मयंक श्याम भी अपने पिता के पद चिह्नों पर चलते हुए एक अंतर्राष्ट्रीय कलाकार बन चुके हैं। यूं तो मयंक के कलाकर्म की प्रदर्शनी विदेशों में होती रहती है, पर इस बार उसे ज्यादा खुशी इसलिए हुई कि पेरिस में प्रदर्शनी के साथ उसके कलाकर्म पर लिखी एक पुस्तक का लोकार्पण भी पेरिस में हुआ।

रूबी सरकार
वरिष्ठ पत्रकार

जनगढ़ कलम- मयंक कहते हैं कि मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मैं एक ऐसे यशस्वी पिता का पुत्र हूं, जिन्होंने अपनी अभूतपूर्व कलाप्रतिभा से एक नवीन चित्रकला शैली को जन्म दिया और उसे वैश्विक पहचान दिलाई। 'जनगढ़ कलम' के नाम से स्थापित इस चित्रकला शैली का मैं वारिस हूं और अपने पिता की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाने का काम कर रहा हूं। 'जनगढ़ कलम' चित्रकला शैली की सही जानकारी न होने के कारण कुछ लोग इसे 'गोंड पेंटिंग' कहते हैं।

विरासत को आगे बढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ - मुझे अपने पिता से 'जनगढ़ कलमकारी' की न सिर्फ तालीम मिली, बल्कि उस विरासत को आगे बढ़ाने और निखारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारे पूर्वजों के द्वारा बताई गई पारंपरिक कहानियों, कथाओं एवं मेरे पिता के चित्रों से मुझे विशेष प्रेरणा मिली है, जिसके आधार पर मैं अपनी कल्पनाशील विचारों के द्वारा चित्र रचता हूं। मेरे पिता के कारण बचपन से ही मेरे अंदर कला के प्रति विशेष रुचि जन्म ले चुकी थी, परंतु मेरे पिता के देहांत के बाद निरंतर अपने इस कला के प्रति 20 सालों से कार्यरत हूं। वैसे तो आरंभ में मैं सफेद कागज पर काली स्याही और पेन से चित्र बनाता था, बाद में धीरे-धीरे मैं रंगों से जुड़ता चला गया और प्राकृतिक रंगों के जो निखार हैं, उसे एक्रेलिक कलर में बनाकर इस्तेमाल करने लगा और उन रंगों को अपनी चित्रकला में जोड़ने लगा, परंतु चित्रकला के साथ-साथ मैंने अपने पिता को मिट्टी की मूर्ति बनाते और काम करते हुए देखा था, इसलिए मन में कहीं न कहीं मेरे अंदर मिट्टी और प्रकृति के रंग से जुड़े हुए कुछ काम करने की ललक बनी हुई थी, जिसे मैं किसी न किसी रूप में कभी न कभी करने का इच्छुक था। प्रधान गोंड समाज द्वारा अपने धार्मिक सामाजिक कार्यों में इस्तेमाल की जाने वाली पारंपरिक मिट्टी जिसका नाम रामराज है। यह मिट्टी अमरकंटक के जंगलों में नर्मदा नदी के किनारे मिलती है। मैंने इसी मिट्टी और प्राकृतिक रंगों पर काम करना शुरू किया।

2021 में मिट्टी के रंगों से पहली बार कागज पर किया काम

मयंक बताते हैं कि मैंने जनवरी 2021 में मिट्टी के रंगों से पहली बार कागज पर कम किया, जो मेरे लिए बहुत अद्भुत अनुभव था। मैंने पहली बार धरती के रंग से पहला चित्र धरती का ही बनाया। धरती की उत्पत्ति की कहानी को उसमें चित्रित किया था। धीरे-धीरे मैं धरती के रंगों की गहराइयों में उतरता चला गया। इस दौरान मैंने कुछ और भी प्रयोग किए तथा फूल पत्तियों के रंगों से भी काम करना शुरू किया, जो मेरे लिए और भी आकर्षण का केंद्र था। मयंक कहते हैं कि मेरे पिताजी ने गांव से अपनी दीवारों में अपनी इच्छा कल्पना से जो चित्र रचे थे, उससे प्रेरित होकर, उन्हें भोपाल शहर लाया गया और उन्होंने एक्रेलिक पोस्टर कलर से पहली बार भोपाल शहर में अपनी नई चित्रकला शैली को रचा। पिताजी के आशीर्वाद से प्रधान गोंड समुदाय में मुझे पहली बार पारंपरिक मिट्टी एवं प्राकृतिक रंगों से चित्र बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। मैंने प्राकृतिक रंगों का धरती के रंगों के साथ तालमेल बिठाकर अपनी आत्म कल्पना से नए आकार के रंग रूपों को रचना शुरू कर दिया था। मैंने हर एक चित्र में उन कल्पनाओं को चित्रित किया है, जो मेरे अंतर्मन से निकला है।

चोला माटी

पेरिस में यह प्रदर्शनी 'चोला माटी' के नाम से आयोजित की गई। मेरे पिता एक गीत गाते थे, जिसका आशय यह था कि 'यह तन मिट्टी का चोला है और एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा।' अपने पिता को मैंने 'चोला माटी गीत' गीत गाते हुए अक्सर सुना था। इस आधार पर मैंने मिट्टी और प्राकृतिक रंगों से निर्मित चित्रों की इस प्रदर्शनी के लिए 'चोला माटी' नाम सुझाया। जिसे स्वीकार किया गया और इसी नाम से यह प्रदर्शनी और पद्मजा श्रीवास्तव ने इसी नाम से इन चित्रों पर केंद्रित पुस्तक तैयार की।

आर्ट गैलरी

रजा की अंकुरण

एसएच रजा की पेंटिंग 'अंकुरण' (Ankuran) उनके प्रसिद्ध 'बिंदु' श्रृंखला का हिस्सा है। ये भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता से प्रेरित है। इसमें बिंदु से अंकुरण की प्रक्रिया को दर्शाया गया है। ये जन्म, ऊर्जा और अनंत संभावनाओं का प्रतीक है। ये चित्र जीवंत रंग, वृत्त, त्रिभुज और ज्यामितीय पैटर्न ब्रह्मांडीय सामंजस्य और सृजन को दर्शाते हैं। यह पेंटिंग 1987 में बनाई गई थी और रजा के कलात्मक पुनर्जन्म और भारतीय विरासत के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाती है। ज्यामितीय रूप पेंटिंग में वृत्त (निरंतरता), त्रिभुज (ऊर्जा, पुरुष-प्रकृति) और रेखाओं के साथ-साथ भारतीय पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु) के रंगों (सफेद, काला, लाल, नीला और हरा) का प्रयोग है। यह सिर्फ एक दृश्य नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण का निमंत्रण है, जो ब्रह्मांड और मानव आत्मा के सार पर चिंतन कराता है, जिसमें रजा भारतीय दर्शन और आधुनिकतावाद को मिलाते हैं।

एसएच रजा के बारे में

सैयद हैदर रजा (एसएच रजा) 20 वीं सदी के भारत के सबसे प्रतिष्ठित आधुनिकतावादी चित्रकारों में से एक थे। मध्य प्रदेश के मंडला में जन्मे रजा ने 1947 में स्थापित 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' के माध्यम से भारतीय कला को एक नई दिशा दी। 1950 में पेरिस जाने के बाद, रजी की शैली लैंडस्केप से हटकर अमूर्त ज्यामितीय अभिव्यक्तियों की ओर मुड़ गई। उनकी कलात्मक यात्रा का शिखर 'बिंदु' की अवधारणा थी, एक केंद्रीय बिंदु, जो भारतीय दर्शन में ब्रह्मांड के जन्म और ऊर्जा का प्रतीक है। उनकी पेंटिंग्स, जो अक्सर 'बिंदु', 'प्रकृति', 'शून्य' और 'नाद' जैसे विषयों पर केंद्रित होती थीं, जीवंत रंगों और प्रतीकात्मकता से भरी थीं। रजा को उनके योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिले, जिनमें भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण (2013) और फ्रांस का सर्वोच्च सम्मान 'लीजन ऑफ ऑनर' शामिल है। वह 2010 में भारत लौट आए और 2016 में अपनी मृत्यु तक कला जगत को प्रेरित करते रहे।

सुवा नृत्यः ग्रामीण संस्कृति की धड़कन और परंपरा का रंग

भारत विविधताओं और परंपराओं से भरा देश है, जहां हर प्रदेश अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता है। कई परंपराएं समय के साथ धुंधली पड़ गई हैं, तो कई आज भी उतनी ही जीवंत और प्रभावशाली हैं। इन्हीं जीवंत परंपराओं में से एक है छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध सुवा नृत्य, जो ग्रामीण जीवन, आस्था और उत्सव का सुंदर संगम है। 'सुवा' का अर्थ होता है- तोता और इसी नाम पर आधारित यह लोकनृत्य लोकभावना को बड़े ही सहज रूप में अभिव्यक्त करता है।

छत्तीसगढ़ के गांवों में यह नृत्य प्राचीन काल से महिलाओं और युवतियों के समूह द्वारा किया जाता है। नृत्य की तैयारी भी कम रोचक नहीं होती है। महिलाएं बांस की बनी छोटी टोकरी में धान भरकर उसके ऊपर मिट्टी से बनाई गई तोते की प्रतिमा रखती हैं। यही टोकरी पूरे नृत्य का केंद्र बन जाती है। रंग-बिरंगे परिधानों में सजी महिलाएं इस टोकरी को अपने संग लेकर गोल घेरा बनाती हैं और ताल के साथ धीमे-धीमे झूमते हुए सुवा नृत्य प्रस्तुत करती हैं। ड्रम या अन्य वाद्यों का प्रयोग कम ही होता है। इसका असली सौंदर्य महिलाओं की तालबद्ध ताली और सामूहिक सुर में गाए गए लोकगीतों में है।

प्राचीन मान्यता के अनुसार, जब महिलाएं सुवा नृत्य करते हुए किसानों के घर-घर जाती थीं, तो गांववासी उन्हें उपहारस्वरूप अनाज या पैसा देते थे। यह सिर्फ उपहार नहीं, बल्कि सम्मान और आस्था का प्रतीक था। संकलित धन और अनाज का उपयोग वे अपने सामूहिक उत्सव गौरा-गौरी विवाह में करती थीं। इस प्रकार, सुवा नृत्य न केवल मनोरंजन का माध्यम रहा है, बल्कि सामाजिक जुड़ाव और सामुदायिक सहयोग की भी सुंदर परंपरा है।

धान की फसल कटने के बाद महिलाएं यह नृत्य करती हैं, मानो प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रही हों। गीतों में उनकी भावनाएं, गांव का दैनिक जीवन, फसलों की खुशहाली और आपसी सौहार्द का चित्रण बहुत सहजता से झलकता है। यही कारण है कि यह नृत्य ग्रामीण जीवन की सरलता, सुंदरता और सामूहिकता का सजीव रूप माना जाता है।

आज भी सुवा नृत्य छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है। यह केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि पीढ़ियों को जोड़ने वाली धरोहर है, जो महिलाओं को अभिव्यक्ति, सहभागिता और सांस्कृतिक गर्व का मंच प्रदान करती है। ऐसे लोकनृत्य हमें हमारी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा देते हैं। इसलिए इस समृद्ध परंपरा को संरक्षित करना और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है।

रंग-तरंग

रचनात्मकता, कला और संस्कृति का जीवंत संगम

बीते दिनों राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी और कार्यशाला का बरेली स्थित यामिनी आर्ट गैलरी में आयोजन किया गया। यह आयोजन कला परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ गया, जिसने न केवल स्थानीय दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया, बल्कि कलाकारों को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। समापन समारोह में कला जगत की हस्तियों के साथ-साथ प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति ने आयोजन की भव्यता को और बढ़ा दिया। प्रदर्शनी में लगाई गईं विविध शैलियों की पेंटिंग्स ने दर्शकों को कला की गहराई से रूबरू कराया। प्रदर्शनी में कई वरिष्ठ कलाकारों की कृतियों ने दर्शकों का ध्यान खींचा। विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं दो पेंटिंग्स- मो. तारिक अनवर की 'मैन्युफैक्चरिंग' और सुनील कुमार की 'पंचमुखी गणेश'। 'मैन्युफैक्चरिंग' ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं और उत्पादन प्रक्रिया को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया, वहीं 'पंचमुखी गणेश' ने भक्ति और पारंपरिक कला का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत किया। दर्शकों ने इन कृतियों की बारीकियों को समझने का प्रयास किया। कार्यक्रम के अंत में, तारा आर्ट फेस्ट के आयोजक मो. तारिक अनवर ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। उन्होंने इस फेस्ट की सफलता को देखते हुए इसे केवल बरेली तक सीमित न रखते हुए, राज्य और देश के अन्य सभी प्रमुख शहरों तक ले जाने की अपनी महत्वाकांक्षी योजना साझा की। विशेष अतिथि और शिक्षाविद डॉ. उजमा कमर ने सभी कलाकारों, विशेष रूप से बाल कलाकारों के बेहतरीन चित्रों की सराहना की और इस राष्ट्रीय आयोजन की सफलता के लिए पूरी टीम के प्रयासों की प्रशंसा की।